परिचय के बिना किसी को भी भगवान मानकर उसका जाप करना तो आगे तांगा और पीछे घोड़ा बांधने की-सी बात करना है। मानने से पहले तो जानना ज़रूरी होता है। कोरा मानना तो गोया अंधश्रद्धा का आधार लेना है। विवेकपूर्ण तथा भावपूर्ण सम्बंध के एकाकार होने और एक पर ही केन्द्रित होने को ही 'राजयोग' कहते हैं।"

'मंत्र को ही' योग मान लेना सही है...!!

आज योग शब्द सुनते ही मानस पटल पर आसन-प्राणायाम करता हुआ व्यक्ति ही समाने आता है। तो कहीं और गुरुओं के पास जायें तो वे कोई मंत्र देते हैं और उसको जपने को कहते हैं। संसार में गुरुओं ने जितने भी मंत्र अपने शिष्यों या अनुयायियों को दिये हुए हैं, उन सभी का अर्थ तो यही है कि - 'मैं भगवान या भगवती को नमस्कार करता हूँ।' गुरू लोग पहले से ही अपने शिष्य के स्वभाव को तथा उसकी भावना को जान लेते हैं और उसे 'राम...राम...राम...' जपने के लिए या 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' जपने के लिए मंत्र देते हैं। जो व्यक्ति जिस देवी, देवता या भगवान को इष्ट मानता हो, उसकी रुचि के अनुसार ही 'गुरू' उसी 'इष्ट' से सम्बंधित मंत्र देते हैं। यह तो बड़ी विडम्बना है, क्योंकि भगवान का वास्तविक परिचय भी तो होना चाहिए। परिचय के बिना किसी को भी भगवान मानकर उसका जाप करना तो आगे तांगा और पीछे घोड़ा बांधने की-सी बात करना है। मानने से पहले तो जानना ज़रूरी होता है। कोरा मानना तो गोया अंधश्रद्धा का आधार लेना है। आज हम इसी पर थोड़ा सा प्रकाश डालेंगे।

मंत्र जपने वालों का ध्यान मंत्र की ओर रहता है और बारम्बार उस शब्द का अभ्यास करना 'स्मृति' दिलाये रखता है। भावनापूर्ण तथा परिचय सहित प्रभु से स्वाभाविक रीति से हम कुछ भी वार्ता करें, ये अधिक स्वाभाविक भी है और सूक्ष्म भी। विशेष मंत्र का उच्चारण करने वालों का ध्यान शब्दों की ओर रहता है। इससे उनका ध्यान प्रभु की ओर न होकर बंटा हुआ सा होता है। जबकि स्वाभाविक स्नेह, सहज भाव से होने वाली प्रभु स्मृति में पूरा ध्यान ज्योति स्वरूप प्रभु की ही ओर रहता है। इसलिए उसमें विचार तरंगें सीधी लक्ष्य को जाकर स्पर्श करती हैं और योग की धारा अभंग, अखंड, अमिश्रित और एकांकी होती है।

योग 'प्रभु' से लगाना है ना कि 'मंत्र' से

यदि मंत्र उच्चारण या स्मरण करने वाला कोई व्यक्ति हमारे इस प्रश्न का निषेध करते हुए कहता है कि मंत्र-स्मरण में हमारा ध्यान मंत्र की ओर रिंचक भी नहीं रहता, बल्कि पूर्णतः इष्ट ही की ओर रहता है। तब फिर मंत्र की आवश्यकता ही क्या है? मंत्र का स्मरण करने वाले लोग मंत्र की प्रायः यही तो आवश्यकता बताते हैं कि मन को टिकाने के लिए यह सहायक होता है। यदि यह सहायक नहीं है तो इसकी आवश्यकता ही नहीं रही, और यदि यह सहायक है तो स्पष्ट है कि मन का ध्यान बंट जाता है। जिस क्षणांश में मन प्रभु में टिका है, उतना समय वह मंत्र भंग हुआ मानिये, और जिस क्षणांश में मन मंत्र पर आश्रित होता है, उस क्षणांश में वह प्रभु से हटा होता है। तब वह मनुष्य योग-स्थिति में नहीं होता। गोया तब प्रभु से योग होने की बजाय उसका योग मंत्र से होता है। दूसरी बात यह है कि यदि मंत्र एक सहज क्रिया की तरह स्वतः ही होता रहता है अर्थात् उसमें ध्यान रिंचक मात्र भी नहीं देना पड़ता, तब तो उसमें न कोई रस ही रहा, न ही कोई भाव रहा। ये तो हमारे साधन, धारणा और ध्यान से रहित होने के कारण समाधि अथवा ईश्वरानुभूति देने वाला नहीं हो सकता। तब उसका क्या लाभ!

कुछ लोग कहते हैं कि मंत्र के उच्चारण अथवा स्मरण से विशेष प्रकार की तरंगें अथवा प्रकम्पन वायुमण्डल में प्रवाहित होते हैं, जो कि वायुमण्डल में आध्यात्मिकता, शांति तथा उल्लास पैदा कर देते हैं। मंत्र की शब्द रचना एवं अक्षर याचना ऐसी होती है कि उससे विशेष प्रकार की सिद्धि होती है तथा उससे इष्ट की कृपा होती है। शब्दों का विशेष प्रभाव होता है, इससे हम इनकार नहीं करते हैं। यह तो आज सभी जानते हैं कि संगीत का प्रभाव पुष्पों और पौधों पर भी पड़ता है, दूध देने वाले पशुओं पर भी ऐसा प्रभाव पड़ता है कि संगीत के आधार पर वे कुछ अधिक दूध देते हैं। संगीत द्वारा कारखानों में कार्य करने वाले व्यक्तियों की कार्यक्षमता बढ़ जाती है। किंतु इस प्रसंग में ध्यान देने योग्य बात यह है कि मुख्य रूप से यह प्रभाव गीत द्वारा उभारे गए आवेगों अथवा भावों के कारण से होता है। कला कोई भी हो, वह मनुष्य के भाव पक्ष तथा प्रेम, उत्साह इत्यादि से सम्बंधित होती है। अतः वास्तविक मंत्र तो प्रेम ही है, जो कि आत्मा को परमात्मा की लगन में मगन कर देता है। प्रेम ही दो आत्माओं को जोड़ने वाली चीज़ है। आत्मा और परमात्मा के मिलाप के लिए परिचय और प्रेम ही साधन है।

अतः योग ना ही कोई मंत्र है, ना ही कोई आसन-प्राणायाम। एक ऊर्जा का उस सर्वोच्च ऊर्जा ज्योतिर्मय परमात्मा के साथ जुड़ने का नाम है- राजयोग। प्रेमपूर्ण सम्बंध स्थापित होने पर ही उसके साथ जुड़ाव होता है। तो विवेकपूर्ण तथा भावपूर्ण सम्बंध के एकाकार होने और एक पर ही केन्द्रित होने को ही राजयोग कहते हैं। तब योग को सिर्फ मंत्र, तंत्र और अंगमर्दन की प्रक्रिया तक सीमित करना उसके साथ अन्याय होगा।

पटना-कंकड़ बाग(बिहार)। उप मुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह, प्रसाद व ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन तथा ब्र.कु. सत्येन्द्र भाई।

अम्बिकापुर-छ.ग.। अमरजीत भगत,खाद्य एवं संस्कृति विभाग राज्यमंत्री को रक्षासूत्र बांधते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी।

मिरज़ापुर-उ.प्र.। राज्यसभा सांसद राम सकल जी को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु बहन।

चंद्रपुर-महा.। पूर्व सांसद व भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री हंसराज अहिर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीतल बहन।

पटना-बिहार। नगर विकास एवं आवास विभाग के विशेष सचिव सतीश कुमार सिंह,आई.ए.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजू बहन। साथ हैं पटना खाजपुरा के वरिष्ठ राजयोग शिक्षक ब्र.कु. रविन्द्र भाई तथा ब्र.कु. सिंधु बहन।

रामपुर-बुशहर(हि.प्र.)। नायब तहसीलदार गोपाल कृष्ण मुखिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन। साथ हैं ब्र.कु. सावित्री बहन व अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा को सपरिवार रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. दुर्गेश बहन, ब्र.कु. श्वेता बहन तथा अन्य।

राजकोट-रविरत्ना पार्क(गुज.)। गांधीग्राम पुलिस स्टेशन में पुलिस इंस्पेक्टर्स को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. नलिनी बहन तथा अन्य।

मरोली-नवसारी(गुज.)। सेवाकेन्द्र में जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ समूह चित्र में कस्तूरबा आश्रम के आचार्य महेश भाई पटेल, वसावा साहेब तथा ब्र.कु. मुकेश बहन।

दिल्ली-शक्ति नगर(डेरावल नगर)। डॉ. विकास गुप्ता,रजिस्ट्रार,दिल्ली युनिवर्सिटी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. लता, ब्र.कु. प्रभज्योत तथा अन्य।